तत्त्वार्थसूत्र

परिचय - पुनरावर्तन

मूलसूत्र

हितोपदेशी　　　　　　　　　　वीतरागी

मोक्षमार्गस्य नेतारं भेत्तारं कर्मभूभृताम्।

ज्ञातारं विश्वतत्त्वानां वन्दे तद्गुणलब्धये॥

सर्वज्ञ　　　　　　　　　　प्रयोजन - भावना

निश्चयसम्यग्दर्शनादि का उपाय

प्रमाणनयैरधिगमः ॥६ ॥

अर्थ—सम्यग्दर्शनादि रत्नत्रय और जीवादि तत्त्वों का [अधिगमः] ज्ञान, [प्रमाणनयैः] प्रमाण और नयों से होता है।

अध्याय १: सूत्र ६ - निश्चयसम्यग्दर्शनादि का उपाय

प्रमाणनयैरधिगमः ।।६।। - सूत्र का स्पष्टीकरण

सम्यग्दर्शनादि रत्नत्रय और जीवादि तत्त्व [सूत्र १-४]

↓

निक्षेप [सूत्र ५] — का अधिगम अर्थात् ज्ञान अर्थात् जानना [सूत्र ६]

- प्रमाण
- नय

प्रमाणनयैरधिगमः ।।६ ।। - सम्यग्ज्ञान का स्वरूप

प्रमाण - वस्तु का सर्वांग जानता हुआ ज्ञान - अनेकान्त ज्ञान

अनेकान्तमय वस्तु

नय - वस्तु का एकदेश जानता हुआ ज्ञान - एकान्त ज्ञान

प्रमाणनयैरधिगमः ।।६ ।। - सम्यग्ज्ञान का स्वरूप

- अनेकान्त = [अनेक + अन्त] = अनेक धर्म
- एकान्त = [एक + अन्त] = एक धर्म

अनेकान्तमय वस्तु	अनेकान्त	एकान्त
सम्यक्	सम्यक् अनेकान्त [प्रमाण]	सम्यक् एकान्त [नय]
मिथ्या	मिथ्या अनेकान्त [प्रमाणाभास]	मिथ्या एकान्त [नयाभास]

प्रमाणनयैरधिगमः ।।६।। - सम्यक् अनेकान्त का स्वरूप

- प्रत्यक्ष, अनुमान तथा आगमप्रमाण से अविरुद्ध एक वस्तु में जो अनेक धर्म हैं, उन्हें निरूपण करने में जो तत्पर है, सो सम्यक्–अनेकान्त है।
- प्रत्येक वस्तु निजरूप से है और पर रूप से नहीं।
- आत्मा, स्व–स्वरूप से है, पर–स्वरूप से नहीं।
- पर उसके स्वरूप से है और आत्मा के स्वरूप से नहीं।
- इस प्रकार जानना सो सम्यक्–अनेकान्त है।

प्रमाणनयैरधिगमः ।।६।। - मिथ्या अनेकान्त का स्वरूप

- जो तत्-अतत् स्वभाव की मिथ्या कल्पना की जाती है, सो मिथ्या अनेकान्त है।
- जीव अपना कुछ कर सकता है और दूसरे जीवों का भी कर सकता है - इसमें जीव का निज से और पर से - दोनों से तत्पना हुआ; इसलिए वह मिथ्या-अनेकान्त है।

प्रमाणनयैरधिगमः ।।६ ।। - सम्यक् और मिथ्या एकान्त का स्वरूप

- निजस्वरूप से अस्तिरूपता और पररूप से नास्तिरूपता–आदि वस्तु का जो स्वरूप है, उसकी अपेक्षा रखकर प्रमाण के द्वारा ज्ञात पदार्थ के एकदेश को (एक पहलू को) विषय करनेवाला नय, सम्यक्–एकान्त है।
- और किसी वस्तु के एक धर्म का निश्चय करके, उस वस्तु में रहनेवाले अन्य धर्मों का निषेध करना सो मिथ्या–एकान्त है।

प्रमाणनयैरधिगमः ।।६।। - प्रमाण के प्रकार

- प्रमाण
  - परोक्ष
    - मतिज्ञान
    - श्रुतज्ञान
  - प्रत्यक्ष
    - विकल
      - अवधिज्ञान
      - मनःपर्ययज्ञान
    - सकल
      - केवलज्ञान

प्रमाणनयैरधिगमः ।।६।। - नय के प्रकार एवं व्याख्या

- **नय**
  - **द्रव्यार्थिकनय** — यह नय द्रव्यपर्यायस्वरूप वस्तु में द्रव्य का मुख्यता अनुभव कराता है।
  - **पर्यायार्थिकनय** — यह नय द्रव्यपर्यायस्वरूप वस्तु में पर्याय का मुख्यता अनुभव कराता है।

प्रमाणनयैरधिगमः ।।६ ।। - नय के दूसरे नाम

- **द्रव्यार्थिकनय को** – निश्चय, शुद्ध, सत्यार्थ, परमार्थ, भूतार्थ, स्वावलम्बी, स्वाश्रित, स्वतन्त्र, स्वाभाविक, त्रैकालिक, ध्रुव, अभेद और स्वलक्ष्यीनय कहा जाता है।
- **पर्यायार्थिकनय को** – व्यवहार, अशुद्ध, असत्यार्थ, अपरमार्थ, अभूतार्थ, परावलम्बी, पराश्रित, परतन्त्र, निमित्ताधीन, क्षणिक, उत्पन्नध्वंसी, भेद और परलक्ष्यीनय कहा जाता है।

अध्याय १: सूत्र ६ - निश्चयसम्यग्दर्शनादि का उपाय

प्रमाणनयैरधिगमः ।।६ ।। - नय सम्बन्धी विशेष स्पष्टीकरण

- द्रव्यार्थिकनय और पर्यायार्थिकनय क्या है ? गुणार्थिकनय क्यों नहीं ?
- सम्यग्दृष्टि और मिथ्यादृष्टि के दूसरे नाम
- ज्ञान दोनों नयों का करना चाहिए, किन्तु उसमें परमार्थतः आदरणीय निश्चयनय है - ऐसी श्रद्धा करना चाहिए।
- निश्चय और व्यवहार नयों का फल
- शास्त्रों में दोनों नयों का ग्रहण करना कहा है, सो कैसे ?

प्रमाणनयैरधिगमः ।।६ ।। - गुणार्थिकनय का प्रयोग न करने का वास्तविक कारण

- पर्यायार्थिकनय का विषय, जीव की अपेक्षित बन्ध-मोक्ष की पर्याय है और उस (बन्ध-मोक्ष की अपेक्षा) से रहित त्रैकालिक शक्तिरूप गुणों एवं त्रैकालिक निरपेक्ष पर्याय से अभेद त्रैकालिक जीवद्रव्य सामान्य, वही द्रव्यार्थिकनय का विषय है - इस अर्थ में शास्त्रों में द्रव्यार्थिक और पर्यायार्थिकनय का प्रयोग किया गया है; इसलिए गुणार्थिकनय की आवश्यकता नहीं रहती।

प्रमाणनयैरधिगमः ।।६।। - गुणार्थिकनय का प्रयोग न करने का वास्तविक कारण

- जीव के अतिरिक्त, पाँच द्रव्यों के त्रैकालिक ध्रुवस्वरूप में उसके गुणों का भी समावेश हो जाता है; इसलिए पृथक् गुणार्थिकनय की आवश्यकता नहीं है।
- शास्त्रों में द्रव्यार्थिकनय का प्रयोग होता है, इसमें गम्भीर रहस्य है। द्रव्यार्थिकनय का विषय त्रैकालिक द्रव्य है, और पर्यायार्थिकनय का विषय क्षणिक पर्याय है। द्रव्यार्थिकनय के विषय में पृथक् गुण नहीं हैं, क्योंकि गुण को पृथक् करके लक्ष्य में लेने पर विकल्प उठता है, और गुणभेद तथा विकल्प, पर्यायार्थिकनय का विषय है।

प्रमाणनयैरधिगमः ।।६ ।। - सम्यग्दृष्टि और मिथ्यादृष्टि के दूसरे नाम

- सम्यग्दृष्टि—द्रव्यदृष्टि, शुद्धदृष्टि, धर्मदृष्टि, निश्चयदृष्टि, परमार्थदृष्टि और अन्तरात्मा आदि
- मिथ्यादृष्टि—पर्यायबुद्धि, संयोगीबुद्धि, पर्यायमूढ़, व्यवहारदृष्टि, व्यवहारमूढ़, संसारदृष्टि, परावल बीबुद्धि, पराश्रितदृष्टि और बहिरात्मा आदि

प्रमाणनयैरधिगमः ।।६।। - निश्चयनय का स्वरूप

- **निश्चयनय**, स्वद्रव्य-परद्रव्य को अथवा उसके भावों को या कारण-कार्यादि को यथावत् निरूपण करता है तथा किसी को किसी में नहीं मिलाता; इसलिए ऐसे ही श्रद्धान से सम्यक्त्व होता है; अतः उसका श्रद्धान करना चाहिए। इन दोनों नयों को समकक्षी (-समान कोटि का) मानना, सो मिथ्यात्व है।

(आधुनिक हिन्दी मोक्षमार्गप्रकाशक, पृष्ठ ३५१)

प्रमाणनयैरधिगमः ।।६ ।। - व्यवहार नय का स्वरूप

- व्यवहारनय, स्वद्रव्य-परद्रव्य अथवा उसके भावों को या कारण-कार्यादि को किसी का किसी में मिलाकर निरूपण करता है; इसलिए ऐसे ही श्रद्धान से मिथ्यात्व होता है, अतः उसका त्याग करना चाहिए।

(आधुनिक हिन्दी मोक्षमार्गप्रकाशक, पृष्ठ ३५१)

प्रमाणनयैरधिगमः ।।६।। - निश्चय और व्यवहार नय का फल

- वीतरागकथित व्यवहार, अशुभ से बचाकर जीव को शुभभाव में ले जाता है; उसका दृष्टान्त मिथ्यादृष्टि द्रव्यलिङ्गी मुनि हैं। वे भगवान के द्वारा कथित व्रतादि का निरतिचार पालन करते हैं; इसलिए शुभभाव के कारण नववें ग्रैवेयक तक जाते हैं, किन्तु उनका संसार बना रहता है
- और भगवान के द्वारा कथित निश्चय, शुभ और अशुभ दोनों से बचाकर जीव को शुद्धभाव में–मोक्ष में ले जाता है, उसका दृष्टान्त सम्यग्दृष्टि है, जो कि नियमतः मोक्ष प्राप्त करता है।

प्रमाणनयैरधिगमः ।।६ ।। - जैन शास्त्रों का अर्थ करने की पद्धति

- जैन शास्त्रों में वस्तु का स्वरूप समझाने के दो प्रकार है - निश्चयनय और व्यवहारनय।
- **निश्चयनय**, अर्थात् वस्तु सत्यार्थरूप में जैसी हो, उसी प्रकार कहना; इसलिए निश्चयनय की मुख्यता से जहाँ कथन हो, वहाँ उसे तो 'सत्यार्थ ऐसा ही है' ऐसा जानना चाहिए।

प्रमाणनयैरधिगमः ।।६ ।। - जैन शास्त्रों का अर्थ करने की पद्धति

- **व्यवहारनय**, अर्थात् वस्तु सत्यार्थरूप से वैसी न हो, किन्तु परवस्तु के साथ का स बन्ध बतलाने के लिए कथन हो; जैसे - 'घी का घड़ा!' यद्यपि घड़ा, घी का नहीं किन्तु मिट्टी का है, तथापि घी और घड़ा दोनों एक साथ हैं, यह बात बताने के लिए उसे 'घी का घड़ा' कहा जाता है। इस प्रकार जहाँ व्यवहार से कथन हो, वहाँ यह समझना चाहिए कि 'वास्तव में तो ऐसा नहीं है, किन्तु निमित्तादि बतलाने के लिए उपचार से वैसा कथन है।'

प्रमाणनयैरधिगमः ।।६ ।। - जैन शास्त्रों का अर्थ करने की पद्धति

- दोनों नयों के कथन को सत्यार्थ जानना, अर्थात् 'इस प्रकार भी है और इस प्रकार भी है'—ऐसा मानना सो भ्रम है।
- निश्चयकथन को सत्यार्थ जानना चाहिए; व्यवहारकथन को नहीं; प्रत्युत यह समझना चाहिए कि वह निमित्तादि को बतानेवाला उपचार कथन है।
- इस प्रकार दोनों नयों के कथन का अर्थ करना, सो दोनों नयों का ग्रहण है। दोनों को समकक्ष अथवा आदरणीय मानना सो भ्रम है। सत्यार्थ को ही आदरणीय मानना चाहिए।

(आधुनिक हिन्दी मोक्षमार्ग प्रकाशक, पृष्ठ २५१ के आधार से)

प्रमाणनयैरधिगमः ।।६ ।। - निश्चयाभासी का स्वरूप

- जो जीव, आत्मा के त्रैकालिक स्वरूप को स्वीकार करे, किन्तु यह स्वीकार न करे कि अपनी भूल के कारण निज की वर्तमान पर्याय में विकार हैं, वह निश्चयाभासी है, उसे शुष्कज्ञानी भी कहते हैं।

प्रमाणनयैरधिगमः ।।६।। - व्यवहाराभासी का स्वरूप

- प्रथम व्यवहार चाहिए, व्यवहार करते-करते निश्चय (धर्म) होता है, ऐसा मानकर शुभराग करता है, परन्तु अपना त्रैकालिक ध्रुव (ज्ञायकमात्र) स्वभाव नहीं मानता और न अन्तर्मुख होता है, ऐसे जीव को सच्चे देव-शास्त्र-गुरु तथा सप्त तत्त्वों की व्यवहार-श्रद्धा है तो भी अनादि की निमित्त तथा व्यवहार (भेद-पराश्रय) की रुचि नहीं छोड़ता और सप्त तत्त्व की निश्चय श्रद्धा नहीं करता; इसलिए वह व्यवहाराभासी है, उसे 'क्रियाजड़' भी कहते हैं और जो यह मानता है कि शारीरिक क्रिया से धर्म होता है, वह व्यवहाराभास से भी अति दूर है।

जिनवाणी स्तुति